भारत मे विकास के लिए नियोजन एवं प्रशासन

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् नव स्वतन्त्र विकासमान तीसरी दुनिया के देशों के प्रशासनों का अध्ययन बड़े व्यापक स्तर पर किया गया। इन अध्ययनों से यह पता लगा कि विकासशील देशों की प्रशासन व्यवस्था स्वदेशी न होकर पाश्चात्य देशों की नकल मात्र है, इन देशों की नौकरशाही में विकास कार्यक्रमों को पूरा करने वाली दक्ष मानव शक्ति का अभाव है, औपचारिकता और लालफीताशाही इन देशों की नौकरशाही को अनावश्यक महत्व देती है, इन देशों के प्रशासकों में एक झूठा अहं समाया हुआ है कि वे जनता के स्वामी हैं न कि सेवक, इनके पास अभी भी औपनिवेशिक काल से चली आ रही कार्यात्मक स्वायत्तता है; इन देशों में राजनीतिज्ञों को अफसरी करने तथा अफसरों को राजनीति करने का स्वाद पड़ जाता है। रिग्स ने समपार्श्वीय (प्रिज्मैटिक) समाजों में पाए जाने वाले प्रशासनों का तथा उनके पर्यावरण का विशद् विवेचन किया। वे प्रारम्भ से ही आर्थिक विकास के लिए लोक प्रशासन पर ध्यान देने का आग्रह करते हैं ।

तुलनात्मक लोक प्रशासन दल (CAG) ने विकास प्रशासन के क्षेत्र में अत्यधिक रुचि ली है। निमरोद रफेली ने तुलनात्मक लोक प्रशासन के साहित्य में दो प्रमुख प्रेरक चिन्तन लक्षित किए हैं : (1) सिद्धान्त निर्माण, और (2) विकास प्रशासन।

ये दोनों विचार परस्पर संयुक्त हैं। तुलनात्मक लोक प्रशासन में सिद्धान्त निर्माण का अधिकांश कार्य 'विकास' से सम्बद्ध है जबकि 'विकास प्रशासन' का अध्ययन सिद्धान्त निर्माण से हुआ है।

विकास प्रशासन : अवधारणा एवं दृष्टिकोण 'विकास प्रशासन' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग भारत के एक प्रशासनिक अधिकारी यू एल गोस्वामी ने अपने एक लेख'दि स्ट्रक्चर ऑफ पब्लिक ऐडमिनिस्ट्रेशन इन इण्डिया' जो सन् 1955 में 'दि इण्डियन जर्नल ऑफ पब्लिक ऐडमिनिस्ट्रेशन' में प्रकाशित हुआ था, में किया। 'विकास प्रशासन' की अवधारणा के प्रतिपादकों में जॉर्ज ग्राण्ट का नाम अग्रणी माना जाता है। उनके बाद वाईडनर, रिग्स, हैडी, मॉण्टगोमेरी, पाइ पानिन्दीकर, आदि विद्वानों ने 'विकास प्रशासन' अवधारणा की व्याख्या प्रस्तुत करने में सहयोग दिया।

'विकास प्रशासन' का अर्थ कुछ विद्वानों द्वारा प्रशासन के आधुनिकीकरण से लगाया जाता है। कुछ विद्वान इसे आर्थिक विकास के लिए एक कुशल साधन के रूप में अधिक महत्व देते हैं। कई विद्वान इसे 'प्रशासनिक विकास' (Development of the Administration) का ही पर्यायवाची मानते हैं।

सामान्य तौर पर, लोक प्रशासन और खास तौर पर विकास प्रशासन राज्य द्वारा जनता की बढ़ती हुई विकासात्मक आवश्यकताओं एवं मांगों को सन्तुष्ट करने की क्षमता से सम्बन्धित है।

विकास प्रशासन सामान्य अर्थ में आर्थिक विकास की योजना बनाने तथा राष्ट्रीय आय को बढ़ाने के लिए साधनों को प्रवृत्त करने तथा बांटने का कार्य करता है।

शाब्दिक दृष्टि से 'विकासात्मक प्रशासन' अपने साहित्य में दो अन्तर्सम्बन्धित अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। प्रथम तो यह विकास कार्यक्रमों के प्रशासन की ओर तथा उन विधियों की ओर भी संकेत करता है जो विकास कार्यक्रमों की पूर्ति हेतु अस्तित्व में आती हैं एवं जिन्हें दूसरे संगठन, विशेष रूप से सरकार प्रयोग में लाती है। दूसरे, यह सीधे तो नहीं तथापि परोक्ष रूप में प्रशासनिक क्षमताओं की अभिवृद्धियों को भी सम्मिलित करता है। 'विकास प्रशासन की अवधारणा में विकास का प्रशासन' और 'प्रशासन का विकास' शब्द परस्पर गुंथे हुए हैं।